**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 98-101**

# मुगल शैली का सौन्दर्य सापेक्ष की समीक्षा

**डॉ0 वीना रानी**

स0 अ0, एम0 ए0 (चित्रकला, राजनीति शास्त्र), पीएच0 डी0, नेट (चित्रकला), बी0 एड0, चंदौसी इण्टर कॉलिज, चंदौसी, सम्भल, उत्तर प्रदेश, भारत।

## प्रस्तावना

मुगल चित्रकला का भारत में ही नहीं वरन् एशिया की कला में स्वतंत्र और महत्वपूर्ण स्थान रहा है यह शैली ईरानी कला परम्परा से उत्पन्न हुई थी परन्तु भारतीय परिवेश में रहकर धीरे–धीरे भारतीय हो गई। मुगल चित्रकारों नें मुगल बादशाहों के जीवन घटनाओं व व्यक्ति चित्र तथा प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। रंग, रेखा संयोजन, उचित स्थान व्यवस्था, प्रकृति का समुचित अध्ययन आदि अनके गुण मुगल चित्रों में विद्यमान हैं अतः मुगल शैलीगत सौदर्न्य के सन्दर्भ में समीक्षा की जाए तो निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचार होती हैं।

## एक चश्म चेहरे

मुगल कला की सबसे बड़ी पहचान एक चश्म चेहरों से है एक चश्म चेहरे राजस्थानी शैली की देने हैं। ईरानी शैली में डेढ़ चश्म[1] व पौने दो चश्म[2] चेहरे बनते थे परन्तु भारत में आकर मुगल चित्रकारों ने एक चश्म चेहरे अधिक पसन्द किए। प्रारम्भ में अकबर की शबीह ''पौने दो चश्म'' बनी हैं।[3] पौने दो चश्म चेहरों में आकृतियों का सादृश्य उतनी जल्दी उतना अच्छा नहीं आ पाता था जितना कि एक चश्म चेहरों में आ जाता है। मुगल चित्रकारों ने राजस्थानी चित्रों को देखकर यह रहस्य जल्दी ही समझ लिया था कि पौने दो चश्म चेहरे व डेढ़ चश्म चेहरे एक चश्म चेहरों के समान सफल एवं उत्तम नहीं हैं। अकबर के पश्चात् मुगल सम्राटों की प्रधानता एक चश्म शबीह ही बनी है। कुछ चेहरे केवल रेखाओं द्वारा ही बनाए गये हैं परन्तु यह देखने में पूर्ण कलात्मक तथा सजीव दिखते हैं।

एक चश्म चेहरे अर्थात जिनमें मुँह का केवल एक रूख दिखाया जाता है, जहाँगीर कालीन चित्रों में पूर्ण रूप से प्रचलित हो गये थे। उस्ताद राम प्रसाद ने एक चश्म चेहरों के बारे में बताया है कि '' एक चश्म चेहरे में उसके प्रत्यंगों अर्थात ललाट, नाक, ओंठ और ठुड्डी का सरहद कायम रहता है। अतः शबीह जल्दी लग जाती है तथा शबीह लगाने वाले को कष्ट नहीं होता''। [4] इसीलिए मुगल चित्रों में एक चश्म चेहरों की भरमार है।

मुगल चित्रकारों ने ऐतिहासिक पुरूषों के भी चित्र बनाए। इस प्रकार के चित्रों में सिकन्दर महान का चित्र अति उत्तम बना है।

## अलंकृत हाशिये

मुगल शैली में चित्र के चारों ओर जो सुन्दर आलेखन बनाए जाते थे उन्हें हाशिये कहते हैं। हाशियों को विभिन्न प्रकार के आलेखनों से अलंकृत किया गया है। मुगल शैली को यह गुण ईरानी शैली से प्राप्त हुआ है। ईरान में चित्र बनाकर उसके चारों ओर सुन्दरतम हाशिये बनाने की प्रथा थी। भारतीय कला में अजन्ता आदि के आलेखन बने हैं परन्तु ताड़पत्रिय पोथियों आदि में हाशियों की प्रथा न भी।

मुगल शैली में हाशिये बड़े परिश्रम व लगन से बनाये गये हैं। कहीं–कहीं ऐसा हुआ है कि हाशिये मानवाकृतियों व पशु–पक्षियों से इतने सजा दिये गये हैं, कि मुख्य चित्र जिनके चारों ओर हाशिये बनाए गये हैं, फीके लगने लगते हैं या उनका महत्व कम हो गया है। [5] इससे मुगल चित्रकारों के चित्रों में हाशिये बनाने की रूचि का पता चलता है। इन हाशियों पर चित्रांकित व्यक्ति का नाम बहुत सुन्दर ढंग से लिखा गया है। कहीं–कहीं पर सादे हाशिये भी प्राप्त हुए हैं।

## रंग विधान

मुगल कला में प्राकृतिक व कृत्रिम दो प्रकार के रंगो का प्रयोग हुआ है। प्राकृतिक रंग, खनिज एवं वनस्पति से तथा कृत्रिम रंग, रसायन से बनते थे। सर्वाधिक खनिज रंगो का प्रयोग हुआ है।

मुगल कला में प्रधानता चौदह रंग प्रयुक्त हुये हैं। सो चार वर्गो में बँटते हैं, खनिज, रासायनिक जांतविक व वानस्पतिक। [6]

**(क) खनिज** – 1. गेरू 2. हिराँजी 3. रामरज 4. हरा ढाबा 5. लाजवर्दी 6. सोना तथा 7. चाँदी।

**(ख) रासयनिक** – 1. सफेदा (फूँका जस्ता) 2. सिंदूर (फूँका सीसा) 3. प्योडी 4. स्याही (काजल) 5. जंगाल।

**(ग) जान्तविक** – 1. गुलाबी

**(घ) वानस्पतिक** – 1. नील

मुगल कला में सोने–चाँदी के रंगों का काफी मात्रा में प्रयोग किया गया है। जिस बारीकी एवं सुन्दरता से इनका प्रयोग मुगल शैली में हुआ है वैसा अन्य शैली में नहीं मिलता। [7] वस्त्रा भूषणों तथा हाशियों में भी सोने चाँदी के रंगों को बड़ी चारूता से लगाया गया है। रात्रि अथवा वर्षा का वातावरण दर्शाने के लिये प्रत्येक रंग में काला रंग मिला दिया जाता था ऐसे रंग को 'बुतारंग' कहते थे तथा चमकदार रंगों को 'चुहचुहा' रंग कहा जाता था। [8] इन रंगों के प्रयोग से चित्र के सौन्दर्य में और वृद्धि होती है।

## सूक्ष्म अलंकरण की प्रवृति

मुगल शैली की एक अन्य विशेषता सूक्ष्म अलंकरण की है। चित्रकार ने चित्रों में प्रत्येक वस्तु में सूक्ष्म से सूक्ष्म अलंकरण करने की चेष्टा की है। वस्त्रों पर बने बेल–बूटों, भवनों की नक्काशी, फर्श की कारीगरी, शरीर के प्रत्येक अंग का एक–एक विवरण, पेड़ों की एक–एक पत्ती यहाँ तक कि दाढ़ी आदि के एक–एक बाल को बड़ी खूबी से बनाने की चेष्टा की गई है। महल की दीवारों पर अधिकतर ज्यामितिय नमूने हैं तथा फर्श आदि पर बेल–बूटों से आलेखन किया गया है, जो लयदार और छंदमय है। [9] हाशियों को भी बड़ी सुक्ष्मतः से अलंकृत किया गया है।

## कोमल और बारीक रेखांकन

मुगल शैली के चित्रों में अत्यधिक महीन कारीगरी देखने को मिलती है। महीन तूलिका से इसमें इतनी पतली–पतली रेखाओं को खींचा गया है कि उन्हें देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता पड़ती

है। जिस महीन कारीगरी से इन महीन रेखाओं को बनाया गया है वह बेजोड़ है। रेखाओं में शक्ति और गति होने के कारण मुगल चित्र निखर उठे हैं। [10]

मुगल चित्रों की रेखाएँ बहुत ही साफ बारीक और लिपि की रेखाओं के समान बनी हैं मुगल रेखाओं में चरित्र–चित्रण की अपूर्व शक्ति है। [11] इन रेखाओं की बारीकी को आँखों से देख पाना मुश्किल है। चेहरे की दाढ़ी मूंछ के एक–एक बाल को बनाने का प्रयत्न किया गया है। यहाँ तक कि गालों पर जो हल्की रेखा होती है उसको भी मुगल चित्रकारों ने बड़ी खूबी व परिश्रम से बनाया है कि आश्चर्य होता है।

## शाही वैभव

इस शैली के चित्रों में मुगल युग की तत्कालीन विलास वैभव पूर्ण राजकीय जीवन व शाही ठाट–बाट की विस्तृत झाँकी देखने को मिलती है। शाहजहाँ के समय के दरबारी चित्रों में यदि कोई व्यक्ति गलत स्थान पर चित्रित हो जाता था तब शाहजहाँ बहुत नाराज होता था क्योंकि वह दरबारी अदब कायदे को मानने वाला व्यक्ति था इसी कारण मुगल शैली के चित्रों में एक विशेष प्रकार की अनुशासन युक्त वातावरण दिखाई देता है। [12] वस्त्राभूषण तथा भवनों के अकंन में भी शाही वैभव की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

## भाव–प्रदर्शन

मुगल चित्रकारों ने चित्रों में जो भाव दिखाने का प्रयास किया है, उसमें वह सफल भी हुए हैं। 'अनवार सुहैली' का एक चित्र है जिसके बारे में कथा प्रचलित है कि एक शाह अपनी रानी की ओर बहुत आकृषित हो गया जिससे उसके राजकाज में बाधा पड़ने लगी जब उसे इसका ज्ञान हुआ तब उस शाह ने अपनी रानी को पानी मे फिकवा दिया। इस चित्र में भावों को बड़ी सुन्दरता से चित्रित किया गया है। जिसमें उदास सम्राट, आज्ञा–पालन में संलग्न सेवक, छटपटाती हुई रानी, घबराये हुए माँझी दृष्टव्य है। [13] हस्त्रमुद्राओं द्वारा भी भावों को प्रदर्शित किया गया है परन्तु अजन्ता के चित्रों जैसी सजीवता इनमें कहीं नहीं है।

## लेख–युक्तता

अन्य भारतीय शैलियों की अपेक्षा मुगल शैली की एक सबसे बड़ी विशेषता चित्रों पर चित्रकारों के नाम तथा चित्र से सम्बन्धित लेख की है। भारत की कला प्रायः अनाम रही है। मुगल कला में यह परम्परा इस पर ईरानी प्रभाव होने के कारण आयी। चित्रकारों ने चित्र के विषय से सम्बन्धित शीर्षक, गद्यलेख अथवा कविता के साथ–साथ उपयुक्त स्थान पर अपना नाम भी अंकित कर दिया है जिससे इस काल की कृतियाँ ऐतिहासिक प्रमाण बन गयी हैं। [14]

## परिपेक्ष्य व छाया प्रकाश का प्रयोग

मुगल शैली में आकाशीय परिपेक्ष्य का भी पालन हुआ है चित्रों में ऊँचे क्षितिज का प्रयोग हुआ है। क्षितिज का स्थान चित्र के मध्य भाग से कुछ ऊपर ही रहता है। [15]

मुगल आकृतियों में गोलाई तथा उभार दिखाने हेतु छाया प्रकाश के प्रयोग का पालन हुआ है। [16] प्रारम्भ में स्थानीय रंग को गहरा करके छाया प्रकाश दिखाने का प्रयास किया गया किन्तु आगे चलकर स्थानीय रंग में काले रंग का मिश्रण करके छाया प्रकाश प्रदर्शित किया जाने लगा।

## रागमाला पर आधारित चित्र

भारतीय संगीत में राग–रागिनियों का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। मुगल काल में तानसेन जैसे सुप्रसिद्ध संगीतकार हुए हैं अतः मुगल काल में रागमाला चित्रों का चित्रण होना स्वाभाविक ही है। मुगल शैली में विभिन्न प्रकार की राग–रागिनियों का चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है।

रामपुर के रज़ा पुस्तकालय में 35 रागमाला लघु चित्र सुरक्षित हैं जिसमें भैरव, दीपक, बसन्त, मेघराग, तथा कांडरा, मालश्री, घनाश्री, गुनकली, गौरी, तोड़ी आदि रागिनियों के चित्र प्रमुख हैं। [17]

## मनोवैज्ञानिक व्यक्ति चित्रण

मुगल कलाकारों ने अपने आश्रयदाताओं के व्यक्ति चित्रों में उनके स्वभाव का बड़ी सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक विधि से अंकन किया है। [18] ईरानी व भारतीय दोनों ही शैलियों में प्रायः भाव प्रधान व्यक्ति चित्रों की प्रधानता रही है। प्रत्येक मुगल बादशाह को व्यक्ति चित्र बनबाने का शौक था। इसी कारण इस शैली में व्यक्ति चित्रण बहुतायत से हुआ है। शाहों के अलावा साधु, सन्तों, अमीर–उम्राओं, शहजादों, रानियों, राजकुमारियों, [19] तथा गणिकाओं आदि के भी व्यक्ति चित्र बने हैं।

अकबर ने सूर, तुलसी, मीराबाई, कबीर आदि सूफी सन्तों आदि के चित्र बड़ी श्रद्धा से बनवाये। विशनदास कृत सलीम चिश्ती शेखफूल [20] का चित्र 'कला भवन' में है। स्वभाव चित्रण की सफलता, आकृति सादृश्य तथा तकनीक दृष्टि से ये चित्र उत्तम कोटि के हैं।

## पशु–पक्षियों का सजीव चित्रण

मुगल शैली में पशु–पक्षियों का जो चित्रण हुआ है वह बड़ा ही सजीव है। उस्ताद मंसूर पक्षियों के चित्रण में बहुत निपुण था। उसके द्वारा कृत बाज का चित्र, जिसमें बाज की आँखों में क्रूरता का जो भाव दर्शित होता है बहुत ही सजीव है।

मुगल बादशाहों को पशु–पक्षियों के चित्रण का बहुत शौक था। हुमायूँ तो शिकार के समय भी चित्रकारों को अपने साथ रखता था पशु–पक्षियों का चित्रण सबसे अधिक जहाँगीर के शासनकाल में हुआ है। शिकार के चित्र जहाँगीर काल में मुगल चित्रकारों के प्रिय विषय बन गये थे। [21] एक शेर के शिकार के चित्र में जहाँगीर को मौत से बचते दिखाया गया है। हाथियों की लड़ाई के दृश्य भी बड़े सुचारू रूप से चित्रित किये गये हैं। [22] मेढ़ों, बकरों, मुर्गों की लड़ाई आदि के चित्र भी बहुत सुन्दर ढ़ग से चित्रित किये गये हैं। [23]

पक्षियों में तीतर, बटेर, मुर्गी, मोर–मोरनी, बत्तख, सारस, बाज आदि का सुन्दर चित्रण हुआ है तथा पशुओं में जेबरा, जिराफ, मेढ़ा, गैड़ा, हाथी, ऊँट, शेर, बैल आदि के सुन्दर चित्र प्राप्त हैं।

## प्रकृति का यथार्थपूर्ण अंकन

मुगल शैली में प्रकृति चित्रण बहुत सुन्दर व यथार्थपूर्ण हुआ है। मुगलों को प्रकृति से अत्यन्त लगाव था। मुगल शैली में प्रकृति का बाहरी यथार्थपूर्ण चित्रण [24] हुआ है परन्तु उसमें भावात्मक एकता का अभाव पाया जाता है।

मुगल बादशाहों में प्रकृति से सबसे अधिक लगाव जहाँगीर को था। उसने मन्सूर से बहुत प्रकार के फूलों का चित्रण करवाया। [25] जहाँगीर को कोई भी प्राकृतिक चित्र मिलता तो वह उसे खरीद लेता था और उनका संग्रह करता था। प्रकृति का सबसे अधिक चित्रण शिकार के चित्रों में हुआ है। शिकार के दृश्यों में पहाड़, वृक्ष, आकाश, नदी आदि बड़ी चारूता के साथ बनाये गये हैं। 'Bhartriharis Meeting with his wife' [26] नामक चित्र में तीन प्रकार के पेड़ों का सुन्दर चित्रण हुआ है, तथा पेड़ों के पीछे ऊँचे पर्वत व बादलों से आच्छादित आकाश दिखाया गया है इस शैली के चित्रों में वृक्ष की एक–एक पत्ती को बनाने का प्रयास किया गया है तथा तने को भी बड़ी बारीकी से बनाया गया है। आकाश, नदी, पहाड़, फूल, वृक्ष तथा अन्य प्राकृतिक दृश्य बड़े सुन्दर बने हैं।

अधिकतर चित्रों में पहाड़ व चट्टानों को छोटे–छोटे खण्डों में बनाया गया है।

रागमाला चित्रों में भी प्रकृति का बड़ा सुन्दर चित्रण हुआ है। श्रीराग[27] व मेघराग[28] के चित्र में बादलों को बड़े सुन्दर ढ़ग से बनाया गया है। अधिकतर प्राकृतिक चित्र शिकार के समय में बने हैं। जंगल के दृश्यों में बड़ी स्वाभाविकता व सौन्दर्य है।

मुगल कला में अनेक विशेषताओं के बाबजूद यह कहा जायेगा कि मुगल कला दरबारी कला बन कर रह गई और उस समय के जन साधारण के दर्शन इसमें नहीं हैं। चित्रकार अपने आश्रयदाताओं की रूचि के अुनसार ही चित्रण करता था। अपनी मौलिक रचना करने का उसे अवसर न मिला। इस शैली की सबसे बड़ी कमी यह थी कि वह जनमानस की कला न बन सकी। यह कला मुगलों के साथ उत्पन्न होकर मुगलों के अन्त के साथ समाप्त हो गयी। अकबर के शासन काल में यह शैली यौवन पर थी परन्तु औरंजेब को चित्रकला विरोधी प्रवृति के कारण अवनति की ओर अग्रसर हुई।

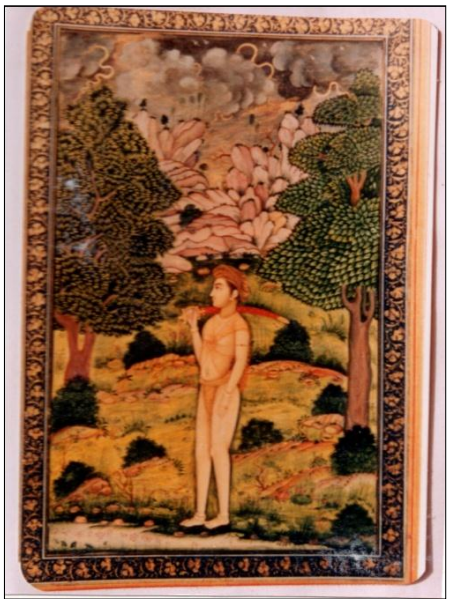

**आकृति 1:** मेघराग, स्टटीज इन इन्डियन पेन्टिंग, एन0 सी0 मेहता

**चित्र 2:** यूरोपियन सभा, स्टटीज इन इन्डियन पेन्टिंग, एन0 सी0 मेहता

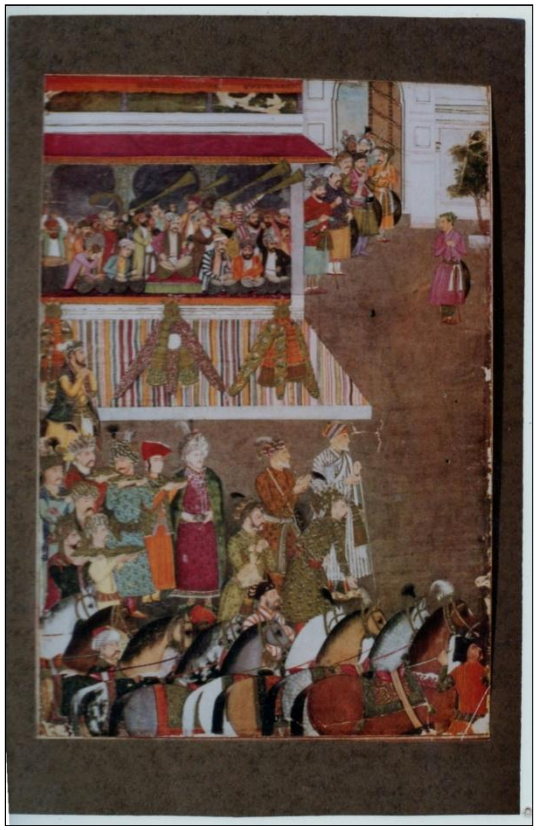

**चित्र 3:** दरबार दृश्य, स्टटीज इन इन्डियन पेन्टिंग, एन0 सी0 मेहता

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 111।
2. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 187।
3. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 187।
4. भारत की चित्रकला, रायकृष्ण दास, पृ. 74।
5. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 112।
6. भारत की चित्रकला, रायकृष्ण दास, पृ. 76।
7. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 114।
8. भारत की चित्रकला का इतिहास, डा0 अविनाश बहादुर वर्मा, पृ. 164 (प्रथम)।
9. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 114।
10. भारत की चित्रकला का इतिहास, डा0 अविनाश बहादुर वर्मा, पृ. 164।
11. भारत की चित्रकला का इतिहास, डा0 अविनाश बहादुर वर्मा, पृ. 164।
12. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 114।
13. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 114।
14. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 189।
15. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 190।
16. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 188।
17. मुगल शैली में रागमाला चित्र, शेखर चन्द्र जोशी और हकीम मोहम्मद खाँ, पृ. 131।
18. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 188।

19. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 202।
20. भारत की चित्रकला, रायकृष्ण दास, पृ. 72।
21. भारत की चित्रकला का इतिहास, डा0 अविनाश बहादुर वर्मा, पृ. 161 (प्रथम)।
22. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 112।
23. भारत चित्रकला का इतिहास, डा0 कादरी, पृ. 209।
24. कला और कलम, डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ. 189।
25. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा0 लाकेश चन्द्र शर्मा, पृ. 104।
26. स्टटीस इन्यिन पेन्टिग, एन0 सी0 मेहता।
27. रामपुर के रज़ा पुस्तकालय में सुरक्षित रागमाला चित्र।